जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा द्वारा 148वें मर्यादा महोत्सव के अवसर पर आयोजित विभिन्न कार्यक्रम

मिलन गोष्ठी

आमेट में आयोजित 148वें मर्यादा महोत्सव के पावन अवसर पर जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के तत्वावधान में संबोधन अलंकरण प्राप्तकर्ताओं तथा उनके पारिवारिकजनों की एक मिलन गोष्ठी दिनांक 26 जनवरी, 2012 को संध्या 6.00 बजे आयोजित की गई, जिसमें महासभा के पदाधिकारीगण, ट्रस्टीगण, देश भर से पधारे संबोधन अलंकरण प्राप्तकर्तागण और उनके परिवार के सदस्यों ने भाग लिया।

महासभा के अध्यक्ष श्री चैनरूप चिंडालिया ने इस अवसर पर अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा कि यह बड़े ही गर्व की अनुभूति का दिन है। महासभा का सौभाग्य है कि उसे पूज्यवरों द्वारा संबोधन प्राप्त समाज के ऐसे निष्ठावान, समर्पित और सिरमौर श्रावक-समाज को सम्मानित करने का अवसर प्राप्त हुआ है, जिन्होंने पूरे धर्मसंघ तथा समाज की कीर्ति पताकाएँ फैलाई हैं। इस समाज ने अपनी अनुकरणीय जीवन शैली तथा धर्म के प्रति गहरी निष्ठा और गुरु के प्रति श्रद्धा भावना के द्वारा यह सिद्ध किया है कि यह एक सर्वश्रेष्ठ समाज है। इस समाज की सम्यक जीवन चर्या, चारित्र और सदाचरण ने पूरे विश्व में उसे एक अलग पहचान दी है। तेरापंथ धर्मसंघ के क्रांतदर्शी आचार्यों ने जैन धर्म के जिन शाश्वत मूल्यों को अपनाने पर सर्वाधिक बल दिया है उसके प्रति संपूर्ण आस्था इस समाज का प्रधान गुण है और इसी बुनियाद पर तेरापंथ समाज ने आध्यात्मिक, नैतिक, सामाजिक और मानवतावादी क्षेत्रों में अभूतपूर्व कार्य किए हैं।

इस अवसर पर उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि महासभा संघीय निर्देश के अनुसार जिन दायित्वों का निर्वहन कर रही है वे संघ और समाज हित में बहुत ही महत्व रखते हैं। उन्होंने महासभा द्वारा संचालित मेधावी छात्र प्रोत्साहन योजना, महासभा शिक्षा सहयोग योजना, ज्ञानशाला, उपासक श्रेणी, विसर्जन, जैन भारती और अभ्युदय के प्रकाशन, आचार्य महाप्रज्ञ पुस्तक विक्रय केंद्र आदि के साथ ही भावी योजनाओं का भी उल्लेख किया तथा आचार्य श्री महाप्रज्ञ की स्मृति में निर्मित होने वाले स्मारक स्थल की एक झलक भी दिखाई।

महासभा के प्रधान ट्रस्टी श्री राजेन्द्र बच्छावत ने अपने उद्‌गार प्रकट करते हुए कहा कि संबोधन अलंकरण समारोह की पूर्व संध्या पर आयोजित इस मिलन गोष्ठी में हम सभी आज धन्यता का अनुभव कर रहे हैं। गुरुवरों से प्राप्त यह संबोधन हमें अपने गुणों को और भी विकसित करने का अवसर देता है तथा हमारे दायित्वबोध की वृद्धि करता है। उन्होंने आह्‌वान किया कि सभी संबोधन प्राप्तकर्ता परिवार संघ तथा महासभा के साथ सक्रिय रूप से जुड़ कर विकास में योगभूत बनें।

महासभा के महामंत्री श्री भंवरलाल सिंघी ने इस अवसर पर कहा कि गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी द्वारा प्रारंभ किया गया संबोधन अलंकरण कार्यक्रम पिछले बीस वर्षों से प्रति वर्ष मर्यादा महोत्सव के अवसर पर आयोजित किया जा रहा है जिसमें पूज्यप्रवर के सान्निध्य में संबोधन प्राप्तकर्ताओं को सम्मानित किया जाता है, जिससे समाज के श्रेष्ठ श्रावका-श्राविकाओं के उदात्त जीवन, तप, त्याग, सेवा सहित उनकी गुरुभक्ति, निष्ठा और समर्पण का तो मूल्यांकन होता ही है साथ ही समाज के समक्ष महत जीवन का उदाहरण भी प्रस्तुत होता है। महामंत्री ने सभी संबोधन प्राप्तकर्ताओं

के चित्र प्रदर्शित कर उपस्थित श्रावक-श्राविका समाज में संबोधन प्राप्ति के प्रति गौरवानुभूति तथा जीवन की उदात्तता एवं गुरु तथा संघ निष्ठा का भाव जागृत किया।

महासभा के उपाध्यक्ष श्री रतन दूगड़ ने सर्वप्रथम पूज्य गुरुवर के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए मिलन गोष्ठी में उपस्थित संबोधन प्राप्तकर्ताओं तथा पारिवारिकजनों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया। इसके साथ ही इस गोष्ठी के लिए तथा अन्य व्यवस्थाओं में संलग्न सभी समितियों तथा सहयोगियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

संबोधन अलंकरण समारोह - 2012

तेरापंथ की धर्मसंघ की पावन भूमि आमेट में आयोजित मर्यादा महोत्सव के अवसर पर परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमणजी के सान्निध्य में दिनांक 27 जनवरी, 2012 को जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा द्वारा संबोधन अलंकरण प्राप्तकर्ताओं को सम्मानित करने का कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें पूज्य प्रवर द्वारा समय-समय पर विभिन्न संबोधनों से अलंकृत देश भर के 135 श्रावक-श्राविकाओं को अलंकृत किया गया।

आचार्य श्री महाश्रमणजी ने इस अवसर पर अपना उद्‌बोध देते हुए कहा कि समाज के श्रावक-श्राविकाओं के सद्‌गुणों, सेवाओं तथा समाज हित में किए गए कार्यों का अंकन करते हुए दिए गए संबोधन आत्मा के उत्थान की दिशा में प्रेरक का कार्य करते हैं और संबोधन प्राप्तकर्ताओं को आत्म साधना के लिए गतिशील बनाते हैं। इन संबोधनों से जहाँ संबोधन प्राप्तकर्ताओं को सम्मान प्राप्त होता है, वहीं उन पर जीवन, समाज और संघ के प्रति अनेक उत्तरदायित्व भी आ जाते हैं। उनसे अपेक्षा होती है कि उनका सासांरिक जीवन और भी सुंदर बने तथा वे अच्छे कार्यों के प्रति ज्यादा सचेष्ट हों, उनमें धर्म के प्रति अधिक आस्था पैदा हो और वे आत्मोन्नयन की दिशा में अग्रसर हों। आचार्यश्री ने कहा कि संबोधन प्राप्तकर्ताओं के कार्यों को अंकित करके महासभा इतिहास रचती है। सभी सभाएं महासभा के विकासशील कार्यों में सहयोग करें, यह अपेक्षा है।

महासभा के अध्यक्ष श्री चैनरूप चिंडालिया ने कहा कि आज का दिन श्रावक समाज की सेवा के मूल्यांकन का दिन है। संबोधन प्राप्त करनेवाले व्यक्ति तेरापंथ की कीर्ति पताकाओं को फहराने वाले ऐसे व्यक्तित्व हैं जिनकी धर्मपरायणता तथा संघ एवं संघपति के प्रति निष्ठा, समर्पण और श्रद्धा अद्वितीय है। इनकी एकनिष्ठता, सेवा भावना, तप, त्याग और विसर्जन की विशिष्ट भावना से सिद्ध होता है कि ये एक महान समाज के अंग हैं। इनके जीवन से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमारा समाज इनसे प्रेरणा ग्रहण कर उत्कर्ष को प्राप्त करेगा और इनके पदचिह्नों पर चलकर हमारी भावी पीढ़ी अपने जीवन को उन्नत करेगी।

महासभा के महामंत्री श्री भंवरलाल सिंघी ने संबोधन अलंकरण के महत्व का उल्लेख किया और कहा कि महान तेरापंथ धर्मसंघ की महान परंपराओं में समाज के निष्ठाशील, संघ तथा संघपति के प्रति समर्पित, तप, त्याग और सेवा भावना से युक्त श्रेष्ठ श्रावक-श्राविकाओं को सम्मानित करने की यह परंपरा महासभा के विभिन्न आयोजनों की श्रृंखला की एक विशिष्ट कड़ी है।

इस क्रम में सर्वप्रथम तेरापंथी महासभा का सर्वोच्च सम्मान **समाज भूषण** अलंकरण सुजानगढ़ निवासी दिल्ली प्रवासी श्री मांगीलाल सेठिया को प्रदान किया गया। अभिनन्दन पत्र का वाचन महासभा के राष्ट्रीय संगठन प्रभारी श्री विजयसिंह

चोरड़िया ने किया। अध्यक्ष श्री चैनरूप चिण्डालिया ने अभिनन्दन पत्र, प्रधान ट्रस्टी श्री राजेन्द्र बच्छावत ने मोमेन्टो एवं महामंत्री श्री भंवरलाल सिंघी ने साहित्य भेंट किया।

अलंकरण प्रदान कार्यक्रम के अंतर्गत शासनसेवी, तपोनिष्ठ श्रावक, तपोनिष्ठ श्राविका, महादानी श्रावक, महादानी श्राविका, श्रद्धानिष्ठ श्रावक, श्रद्धा की प्रतिमूर्ति, कल्याण मित्र आदि संबोधनों से अलंकृत श्रावक-श्राविकाओं को महासभा के अध्यक्ष श्री चैनरूप चिंडालिया, प्रधान ट्रस्टी श्री राजेन्द्र बच्छावत, उपाध्यक्षगण श्री ख्यालीलाल तातेड़, श्री प्रकाश चंद बैद, श्री रतन दूगड़, कोषाध्यक्ष श्री अरुण संचेती और ट्रस्टी श्री भंवरलाल कर्णावट, श्री रूपचंद दूगड़, श्री तुलसी दूगड़ तथा राष्ट्रीय संगठन प्रभारी श्री विजयसिंह चोरड़िया द्वारा स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम का कुशल संचालन महासभा के महामंत्री श्री भंवरलाल सिंघी ने किया।

श्रेष्ठ ज्ञानशाला और श्रेष्ठ सभा पुरस्कार

मर्यादा महोत्सव के अवसर पर आचार्य श्री महाश्रमण के सान्निध्य में महासभा के तत्वावधान में **श्रेष्ठ ज्ञानशाला और श्रेष्ठ सभा पुरस्कार** का कार्यक्रम आमेट में दिनांक 28 जनवरी, 2012 को आयोजित किया गया, जिसमें देश भर में संचालित ज्ञानशालाओं एवं सभाओं के कार्यों का मूल्यांकन करते हुए उनमें श्रेष्ठ कार्य करने वाली ज्ञानशालाओं और सभाओं को पुरस्कृत किया गया।

इस अवसर पर महासभा के अध्यक्ष श्री चैनरूप चिंडालिया ने अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा कि आज का दिन दो दृष्टियों से बहुत महत्वपूर्ण है। एक ओर हमारे धर्मसंघ का पावन पर्व मर्यादा महोत्सव है, जिसका संबंध तेरापंथ धर्मसंघ की आधारशिला से है, क्योंकि मर्यादाएं ही इस संघ के विकास का मूलमंत्र है। पूज्य आचार्य के प्रति असीम आस्था और एकनिष्ठता, गण की अखंडता, अनुशासन का अनुपालन और एकजुटता ही इसके प्राणतत्व है। हम सब आज श्रीगुरुचरण में अपनी अविचल निष्ठा और संपूर्ण आस्था समर्पित कर धन्यता का बोध करते हैं। दूसरी ओर आज भारतीय सांस्कृतिक परंपरा की महान तिथि वसंत पंचमी है जिसका संबंध ज्ञान की आराधना से जुड़ा हुआ है। ऐसे में ज्ञानशालाओं की श्रेष्ठता के मूल्यांकन की प्रासंगिकता बहुत बढ़ जाती है। साथ ही तेरापंथ की महान मर्यादाओं के पालन के क्रम में सभाओं के कार्यों का मूल्यांकन भी बहुत महत्व रखता है क्योंकि इससे हमारे संघ और समाज की प्रगति सुनिश्चित होती है।

श्री चिंडालिया ने ज्ञानशाला के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि इसके द्वारा समाज के बच्चों को संस्कारित और सुशिक्षित किया जाता है। बचपन से ही बालक-बालिकाओं में चरित्र के विकास, संयम के पाठ, सेवा की शिक्षा और देव, गुरु, धर्म के प्रति निष्ठा जागृत करना इसका मूल उद्देश्य है। क्योंकि सद्‌संस्कारों से युक्त बच्चें ही अच्छे नागरिक और मानव बन सकते हैं। उनका आचार-व्यवहार, जीवन शैली और सोच जितनी अच्छी होगी हमारा परिवार, समाज और देश उतना ही मजबूत और उन्नत होगा। उन्होंने ज्ञानशाला के राष्ट्रीय संयोजक श्री सोहनराज चोपड़ा और सभी संयोजकों, सभाओं, तेरापंथ युवक परिषद, महिला मण्डल, प्रक्षिशकों को साधुवाद दिया जो ज्ञानशाला के संचालन में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं।

देश भर में फैली सभाओं के श्रेष्ठ कार्यों के संदर्भ में उन्होंने कहा कि सभाएं अपने-अपने स्तर पर केन्द्र एवं महासभा द्वारा निर्देशित कार्यक्रर्मों और गतिविधियों को संचालित कर धर्म, अध्यात्म, संस्कृति और समाज सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य कर रही हैं। उनके बीच प्रतिस्पर्धा की भावना विकसित करने के लिए सभाओं द्वारा संचालित प्रवृत्तियों के आधार पर उन्हें श्रेष्ठ सभा और विशिष्ठ सभा के रूप में सम्मानित किया जाता है। इस वर्ष गुवाहाटी सभा को श्रेष्ठ

सभा एवं केसिंगा को विशिष्ट सभा के रूप में स्मृति चिह्न एवं पुरस्कार राशि का चेक प्रदान कर सम्मानित किया गया।

महासभा के महामंत्री श्री भंवरलाल सिंघी ने ज्ञानशाला द्वारा किए जा रहे संस्कार निर्माण के कार्य की सराहना की और श्रेष्ठता अर्जित करनी वाली ज्ञानशाला को बधाई दी। सभाओं द्वारा संचालित गतिविधियों से संघ तथा समाज के विकास का उल्लेख करते हुए उन्होंने उनके बीच प्रतिस्पर्धा से होने वाले लाभों को रेखांकित किया।

इस अवसर पर अहमदाबाद और चेन्नई को श्रेष्ठ ज्ञानशाला, दक्षिण हावड़ा एवं चेम्बूर (मुम्बई) को विशिष्ट ज्ञानशाला, तिरुकलीकुण्ड्रम एवं राजनगर को उत्तम ज्ञानशाला के रूप में सम्मानित किया गया। साथ ही श्रेष्ठ प्रशिक्षक, वरिष्ठ प्रशिक्षक, श्रेष्ठ संचालक संस्था, ज्ञानशाला सहयोगी और श्रेष्ठ ज्ञानार्थी आदि को भी सम्मानित किया गया।

महासभा की 98वीं वार्षिक साधारण सभा

महासभा की 98वीं वार्षिक साधारण सभा दिनांक 29 जनवरी 2012 को सायं 6 बजे तेरापंथ भवन, आमेट में आयोजित की गई। महासभा के अध्यक्ष श्री चैनरूप चिण्डालिया ने आगंतुक महानुभावों का स्वागत करते हुए दो वर्ष के कार्यकाल की विशेष उपलब्धियों की जानकारी पावर प्वायंट के माध्यम से दिया।

महामंत्री श्री भंवरलाल सिंघी ने विगत अधिवेशन की कार्यवाही का वाचन एवं वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया जिसे सर्वसम्मति से स्वीकृत किया गया। कोषाध्यक्ष श्री अरुण संचेती ने विगत वर्ष के आय-व्यय का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया, जिसे सदन द्वारा सर्वसम्मति से पारित किया गया। आय-व्यय का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया, जिसे सदन द्वारा सर्वसम्मति से पारित किया गया। आगामी वर्ष हेतु अंकेक्षक के रूप में मेसर्स एस. एम. डागा एण्ड कं. की पुनर्नियुक्ति की गई एवं उनकी मानद सेवाओं हेतु उनके प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

इस अवसर पर अन्य कार्यो के अलावा महासभा के अध्यक्ष, ट्रस्ट बोर्ड के अंतर्गत प्रधान ट्रस्टी, सात ट्रस्टी एवं बोर्ड ऑफ आरबीट्रेटर्स के अंतर्गत तीन आरबीट्रेटर का चुनाव सौहार्दपूर्ण वातावरण में सानन्द संपन्न हुआ। चुनाव प्रक्रिया चुनाव अधिकारी डॉ. बसन्तीलाल बाबेल एवं अतिरिक्त चुनाव अधिकारी श्री सवाईलाल पोखरणा द्वारा संपादित की गई। चुनाव अधिकारी डॉ. बसन्तीलाल बाबेल ने सत्र 2012-14 के लिए सर्वसम्मति से निर्वाचित महासभा के अध्यक्ष के रूप में श्री हीरालाल मालू, प्रधान ट्रस्टी के रूप में श्री कमल कुमार दुगड़, ट्रस्टीगण श्री बिमल कुमार नाहटा, श्री पन्नालाल बैद, श्री राजकरन सिरोहिया, श्री रोशनलाल सांखला, श्री सम्पतलाल मादरेचा, श्री सुरिन्दर मित्तल एवं श्री विवेक कठोतिया तथा आरबीट्रेटर्स के रूप में श्री कन्हैयालाल जैन पटावरी, श्री शैलेष के. झवेरी एवं श्री सिद्धराज भंडारी के नामों की घोषणा की। वार्षिक साधारण सभा का संयोजन महासभा के महामंत्री श्री भंवरलाल सिंघी द्वारा कुशलतापूर्वक किया गया।

दिनांक 30.01.2012 को मर्यादा महोत्सव के कार्यक्रम में सत्र 2012-14 के लिए महासभा के नव निर्वाचित अध्यक्ष श्री हीरालाल मालू ने उपाध्यक्ष - श्री किशनलाल डागलिया, श्री महेन्द्र कुमार धाड़ीवाल, श्री जी. सुकनराज परमार, श्री विमल सुराणा, श्री विनोद बैद, महामंत्री - श्री बिनोद कुमार चोरड़िया, सहमंत्री - श्री बजरंग कुमार सेठिया, श्री जी. भूपेन्द्र कुमार मुथा एवं कोषाध्यक्ष के रूप में श्री सुरेन्द्र कुमार बोरड़ के नामों की घोषणा की।